# अमृता प्रीतम का संक्षिप्त विश्लेषण

डॉ.सौदागर म. साळुंखे
हिंदी .पीएच.डी. मा.ह.महाडीक कला एवं वाणिज्य
महा.मोडनिंब. ता. माढा, जिल्हा. सोलापूर.

## सारांश

अमृता प्रीतम एक प्रमुख महिला पंजाबी लेखिका हैं। वे कवि, उपन्यासकार और निबंधकार भी थीं। बहु तकम उम्र में उनके गहरे विचार 'ठंडिया किरण' (1935) और 'अमृत लहरो' (1936) में परिलक्षित होते थे। इन दोनों कविताओं में एक आध्यात्म को समझ सकती हैं। इसके बाद उन्होंने 'जिंदा जीवन' (1909), 'ट्रेल्डोटे फूल' (1941), 'ओ गिटोन वालिया' लिखीं। )1943(, वडालो देपल्ले विशो )1943(, 'साझ दिलाली' (1944), 'निक्की याही सुगत' (1945), 'लॉकपिरह' (1944), 'पाथर' गीते )1946(, अशोक सेति )1957(, कस्तूरी )1959(, कागज़ात कैनवास )1973बीस की प्रीतम अमृता तक अब ।( कविता संग्रह प्रकाशित हो चुकी है। इनमें लिखे। उपन्यास पच्चीस लगभग उन्होंने . लिखा उन्होंने ) "पिंजर"1950(, "धरती सागर और सिपिया) "2002(, "कच्ची सरकार) "1997(, "रंग के पट्टा) "1998(, "उनकी कहानी", ) "अदालत"1995(, "कोरे कागजी", "नागमणि) "1996(, "उनसार दिन", "एक थी सारा(रेवेन्यू द) टिकट रसीद और " स्टाम्प) (1976क से कहने बात अपनी वह क्योंकि उभरीं में रूप के लेखिका सशक्त एक वह है। आत्मकथा एक जो (भी नहीं डरती थीं अपनी राय, उसकी संवेदनशीलता और सामाजिक बुराइयों के खिलाफ बोलने के लिए। इन भावनाओं को अधिकांश में पुन किया पेश : था गया उसके लेखन। अमृताप्रीतम ने अपने जीवन के लगभग पैंसठ वर्ष अपनी आत्मकथा पुस्तक रसीदी टिकट )The .) में लिखे हैं रेवेन्यू स्टैम्पकिया वर्णन का घटनाओं की जीवन अपने से निडरता उन्होंने था। हुआ प्रकाशित में 1976 जो ( पाठक। इस चर्चा में मैं अमृताप्रीतम की आत्मकथा रसीदी टिकट पर एक संक्षिप्त राय प्रस्तुत करना चाहता हूं रसीदी टिकट।(

**मुलशब्द :** अध्यात्म :, आत्मकथा, ईश्वर, साहस, निडर।

## प्रस्तावना

अमृताप्रीतम की 'रसीदी टिकट' (राजस्व टिकटहिंदी का (, अंग्रेजी, असमिया और साथ ही अनुवाद किया गया है अन्य विदेशी भाषाएं। उन्होंने 'रसीदी टिकट' नामक पुस्तक में अपने जीवन की घटनाओं के बारे में निडर होकर लिखा था 1976 में प्रकाशित हुआ।उन्हें प्रसिद्ध लेखक खुशवंत सिंग ने आत्मकथा लिखने के लिए प्रोत्साहित किया। पर इस वृत्तांत में अमृताप्रीतम ने बताया, "एक दिन खुशवंत सिंह जी ने लापरवाही से कहा, तुम्हारी जिंदगी में ऐसा क्या है बस एक या दो घटनाएं एक आप यदि !... लिखन आत्मकथा चाहते हैं, तो 'एक राजस्व टिकट' के पीछे शायद यह सुझाव देने के लिए कि सभी' अन्य टिकटें अपना आकार बदलती रहती हैं। राजस्व टिकट वही रहता है। " वह सही था। वर्मा)54, 2006) 'राजस्व टिकट' उनके पैंसठ साल के जीवन की यात्रा

है। इस आत्मकथा में उन्होंने लिखा है उसके बचपन से लेकर उसकी शादी तक, उसका प्यार, उसकी साहित्यिक कृतियों के दौरान उतारहै। गया बांटा में भागों छह को आत्मकथा यात्रा। विस्तृत में बारे इसके और चढ़ाव- पहले भाग में उसने अपने परिवार, अपने जन्म, अपने पिता के व्यक्तित्व, अपने बचपन और इसके बारे में भी लिखा

## उसकी शादी और प्रेम जीवन।

प्रसिद्ध पंजाबी लेखिका अमृता प्रीतम का जन्म वर्ष 1919, 31 अक्टूबर को गुजरांवाला था। हुआ में (पाकिस्तान) एक पंजाबी परिवार में। उनके पिता का नाम साधु करतार सिंह हितकारी और माता का नाम राजबीबी था। वह बचपन से ही अध्यात्म की दुनिया से जुड़ी थीं। उनके पिता एक साधु व्यक्ति थे। इसलिए वह अपनी इकलौती संतान को अध्यात्म की शिक्षा दी और सोने से पहले उससे 'कीर्तन सहेला' की प्रार्थना की।

## उद्देश्य और विधि:

भारतीय साहित्य में अमृता प्रीतम एक निडर लेखिका हैं। उन्हें एक निडर प्रतिवादी के रूप में एक लेखक के रूप में याद किया जाता है भारतीय समाज। उन्हें 1983 में उनकी प्रसिद्ध कविता पुस्तक 'कागज ते केनवास' के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला। वह भी भारत सरकार से पद्म श्री )1969), साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त किया और उन्हें डीगया किया सम्मानित से लिट्टी . दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा डिग्री। हालांकि अमृता प्रीतम के साहित्य की खूब चर्चा होती है, लेकिन उनकी आत्मकथा पर चर्चा होती है नजर में नहीं आया है। इसलिए इस प्रस्तुति के पीछे प्रमुख कारण अमृता प्रीतम का प्रकाश डालना है आत्मकथा 'राजस्व टिकट'। अमृता प्रीतम की रसीदी टिकट की चर्चा प्रस्तुत करते समय वर्णनात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। इस विश्लेषण मामोनी गोगोई द्वारा लिखित 'रसीदी टिकट' (द रेवेन्यू स्टैम्पहै। आधारित पर अनुवाद असमिया के ( बोर्गोहेन।

## उसके पिता का शासन।

हम बचपन में सपनों के समंदर में तैरते हैं। अमृताप्रीतम भी सपनों के इस सागर में तैर गई। के लिये इसलिए उसने अपने पिता द्वारा लगाए गए प्रतिबंध को तोड़ने की कोशिश की। उसने राजन के साथ खेलने के लिए उसका ध्यान लगाया अकेलापन और भावनाएं। एक राजन जो उसके सपनों में आया और उसकी हर छोटीथा। सुनता बात बड़ी- जब वह छोटी थी तो उसकी माँ को बीमारी हो गई थी। वह बेहोशी की हालत में बिस्तर पर पड़ी थी। उसकी माँ की सहेली प्रीतम कौर ने अमृताप्रीतम को फोन किया और कहा, "भगवान से प्रार्थना करो जो सहानुभूति दे सके। एक बच्चे का, प्रार्थना व्यर्थ नहीं जाती।12 बोर्गोहेन) ", 2008) इस आशा के साथ वह अपनी माँ के लिए प्रार्थना करने लगी, उसके कोमल मन को विश्वास हो गया कि चूंकि उसने भगवान से प्रार्थना की थी माँ जल्द ही ठीक हो जाएगी। वर्ष 1930, थीं की साल ग्यारह महज प्रीतम अमृतागया। हो देहांत का मां उनकी को जुलाई 31 उस समय के दौरान। वह पूरी तरह से टूट गई थी और उसने अपने पहले के सभी धार्मिक कर्तव्यों और विश्वासों को त्याग दिया था। वह इस वजह से अपने

पिता से भी झगड़ पड़ी। इस प्रकार उसका कोमल हृदय परमेश्वर के विरुद्ध हो गया। उसके पिता ने उसे मजबूर करने के बावजूद उसने कभी ध्यान केंद्रित नहीं कियाप्रार्थना करने के लिए। अमृता प्रीतम ने हर किसी की तरह युवावस्था में कदम रखा। लेकिन बहुत सावधानी से, फिर भी और चुपचाप। क्योंकि वह बहुतसारी रुकावटें थीं। उसकी देखभाल के लिए उसके पास केवल उसके पिता थे। चूंकि उसके दोस्त नहीं थे, इसलिए उसने ज्यादातर खर्च किया उनका समय कविताएँ लिखना और धार्मिक पुस्तकें पढ़ना। उस पर लगाए गए कठोर नियमों और विनियमों ने उसे और अधिक बदल दिया विद्रोही उसने अपनी अस्वीकृति व्यक्त करने के लिए कविता का सहारा लिया। वह बहुतकुछ नहीं कर पा रही थी क्योंकि वह अपने पिता से बहुतडरती थी। ऐसा नहीं है कि उनके पिता उनकी कविता लेखन के खिलाफ थे, वे उनकी कविता के पीछे पहली प्रेरणा थे लेकिन वह चाहता था कि वह धार्मिक मामलों के बारे में लिखे। यह वह समय था जब न केवल भारत को स्वतंत्रता मिली थी बल्कि अपनी युवावस्था के दौरान भयानक विभाजन का समय। यह सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक मूल्यों का अंत था उस समय के दौरान। हर तरफ कलह, कलह और हत्या थी। खून... .. खून था, हर जगह। NS एक मां के प्यार का खून, एक रेप पीड़िता की लाज का खून। यह रक्त अमृताप्रीतम की कविता की स्याही बन गया। उन्होंने इन लोगों के दर्द को ठीक करने के लिए प्रार्थना कविता लिखी। वह जितनी बड़ी होती गई, उसके मन में उतने ही अधिक प्रश्न निर्मित होते गए। वह सभी को नष्ट करना चाहती थी अवांछित सामाजिक नियम। वह और उत्सुक हो गई। उसकी जिज्ञासा से विकसित हुएप्रश्न और यहाँ तक कि उत्तर भी उसे शांत नहीं किया। इसने उसे और अधिक विद्रोही बना दिया।

प्यार एक स्वर्गीय एहसास है। ये अहसास आया प्यार एक स्वर्गीय एहसास है। यह भाव उनके जीवन को सजाने वाले 'शहीर' के रूप में उनके जीवन में आया मीठे और प्यारे एहसास के साथ। उसके बहुतसारे प्रेमी थे लेकिन उसे कभी प्यार नहीं हुआ। उसकी भाषा में "थे प्रेमी कई मेरे" मेरी उम्र का। लेकिन मैं बदला लेने में असमर्थ था, "(बोर्गोहेन १७, २००८( कई प्रसिद्ध लोगों को उनकी सुंदरता से प्यार हो गया। उस दौरान एक प्रसिद्ध पंजाबी लेखक को प्यार हो गया उसे समर्पित किया और बहुतसारी कविताएँ लिखीं। वह पंजाबी के सबसे सम्मानित कवि मोहन सिंह हैं। इसके बारे में बात कई खबरें बनाई गईं। उन्होंने उनके लिए "संपत्ति" है प्रकार इस जो लिखी कविता एक नामक थी। खड़ी सामने के दरवाजे चुपचाप वह" पति की संपत्ति के एक टुकड़े की तरह" (बोर्गोहेन २३, २००८( वो दिन उन्हें बहुतपरेशान करते थे। एक दिन उसने मोहन सिंह से साफ -कहा साफ-''मोहन सिंह जी, मैं आपका सम्मान करती हूं

बहुत..... मैं तुम्हारा दोस्त हूँ.... आप और क्या चाहते हैं?" (बोर्गोहेन २४, २००८( वह ऐसे बहुतसे प्रेमियों से मिली जो उसकी सुंदरता और उसके ज्ञान से मंत्रमुग्ध थे। अमृताप्रीतम ने बहुतही कम उम्र में शादी कर ली थी जैसे कि यह व्यवस्था की गई थी। वह अपनी शादी के खिलाफ थी। में वर्ष थी हुईसे सिंह प्रीतम व्यवसायी पाकिस्तानी एक शादी उनकी में 1936, जब वह केवल की वर्ष 16 पास सकेउ थीं। पाकिस्तान में ना "हुसैरी'मक व्यवसाय। उनकी दुकान का नाम "जगत सिंग कुवट्टा" था। जगत सिंग अमृताप्रीतम थीं ससुर। रहने में ट्वेंटी नंबर के खास घर एक के दिल्ली साथ के इमरोज कलाकार और दिया छोड़ को पति अपने उन्होंने में 1960 लगीं। पंज। उनके प्लेटोनिक प्रेम ने असम के प्रसिद्ध लेखक ममोनी रईसम गोस्वामी को चकित कर दिया, जो भी थे

## उसकी मित्र।

प्यार पचास साल से अधिक समय तक रहा जिसने स्पष्ट रूप से उनके प्यार की गहराई की पुष्टि की। वो एक थी --------- एक बेटी और एक बेटे की मां। दूसरेभाग का नाम उन्हों में भाग इस गया। रखा "सख्यात लोगोत खोटिकबुरोर"ने अपने साहित्यिक जीवन का परिचय दिया पाठकों, उनकी विदेश यात्राओं के साथ पुस्तक प्रसिद्ध उनकी साथ-'पिंजर' के बारे में भी बताया। तीसरे भाग का नाम की बात में बारे के होने खत्म शादी अपनी उसने यहां गया। रखा "परीक्षा अग्नि", इमरोज के साथ उनके प्रेम जीवन की जटिलताओं और उनके साहित्यिक जीवन के दौरान विभिन्न बाधाओं का सामना करना पड़ा। वह रसीदी टिकट में अपने आलोचकों से कहा। "कुछ लोग खुद को ग्लैमर और पुरस्कारों की दुनिया में डालकर बहुतअराजकता पैदा कर रहे हैं। मैं हूँवहाँ नहीं। मैं वहां नहीं

था और कभी नहीं रहूंगा। मेरी बस एक ही ख्वाहिश थी कि मैं अपने और अपने पाठकों में जगह बना लूं दिल।10 दिवेदी) ", 1997)।चौथे भाग का नाम बताया में बारे के घटनाओं उन्होंने यहां गया। रखा "कोरे अघाट अवेगे निरोबोटर" उनके साहित्यिक पुस्तकों के विकास से संबंधित है। कुल मिलाकर उन्होंने अपनी साहित्यिक दुनिया को वास्तविकता के मंच पर बनाया है। आक दा बुट्टा, यात्री, दू औरोतन, अलका,kएक थी अनीता,,,अरियल,जेबकत्रे आदि कुछ ऐसे उपन्यास हैं जिनके पात्रों की भी यहाँ चर्चा की गई है। साथ ही उन्हें उन अद्भु तयादों के बारे में याद आया जिनके साथ उन्होंने बिताया था मरोज पांचवें भाग का नाम फिनिक्सर" भी वह अलावा के करने बात में बारे के लोगों फिनीसियाई में भाग इस था। गया रखा "बोनखो उसकी डायरी के कुछ हिस्से के बारे में चर्चा की। उन्होंने अपनी शादी, इंदिरा गांधी के साथ अपनी दोस्ती और भी के बारे में बताया उसके बच्चों के बारे में। अंतिम और छठे भाग का नाम की बात उसने था। गया रखा "पनिजुला अंखोनोट जेतुका हाटोट एकोन" ज्ञानपीठ पुरस्कार जो उन्हें वर्ष में 1983 किए। तप्रस्तु भी भाग अन्य के डायरी अपनी उन्होंने और था मिला लिए के "कैनवास के कागज" इस भाग में उन्होंने इंदिरा गांधी की हत्या, उनके सपनों के साथकी बात में बारे के पत्रों गए दिए द्वारा उनके साथ-

इंदिरा गांधी। उनके जीवन की अधिकांश घटनाओं का वर्णन उनकी आत्मकथा में मिलता है। उसका निडर मन और उसका जीवन के प्रति दृष्टिकोण है। गया दिखाया से रूप स्पष्ट में "टिकट राजस्व"

वर्ष में भाषा पंजाबी पुस्तक यह में 1976 'रसीदी टिकट' के नाम से प्रकाशित हु ई।था गया किया अनुवाद इसका में 1977 हिंदी और अंग्रेजी में। इस प्रकाशन के बाद कुछ हरी आंखों वाले लोगों ने उसकी किताब पर प्रतिबंध लगाने की कोशिश की लेकिन वे असफल रहे। रसीदी टिकट से संबंधित इंदिरा गांधी ने अमृ ता प्रीतम को लिखा पत्र सी बहु त लिए के करने प्राप्त पुस्तक आपकी मुझे"- लिया पढ़ में एक इसे मैंने और लिया उधार लिए मेरे इसे ने मेनका में अंत पड़ी। करनी पूछताछ रात बिना ..... खड़े होकर इसने मेरे दिल को छू लिया। विषय के कारण नहीं बल्कि आपके व्यक्त करने के तरीके के कारण उन्हें शब्दों में। हालांकि यह आपकी कहानी है, यह बहु तअधिक सार्वभौमिक है। प्रकृ ति और रूप भिन्न हो सकते हैं लेकिन सपनों और लड़ाई के लिए जरूरी चीजें लगभग सभी लोगों के लिए समान होती हैं। बहु तसे लोग अपना सच छुपाते हैं बनता है और सतह पर तैरता है... .." (बोर्गोहेन १२४,

## निष्कर्ष :

एक आत्मकथा कभी भी पूरी तरह से पूरी नहीं हो सकती क्योंकि किसी के बारे में सब कुछ लिखना असंभव है जिंदगी। अमृ ताप्रीतम ने अपनी आत्मकथा में अपने जीवन के पैंसठ वर्षों को भी शामिल किया है। वह एक निडर लेखिका थीं। एक महिला को बहु तकुछ भुगतना पड़ता है और वे ही आपके द्वारा बनाए गए अनावश्यक नियमों का पालन करने के लिए मजबूर हैं समाज क्योंकि वे लड़ने से बहु तडरते हैं। लेकिन अमृ ताप्रीतम में वो हिम्मत थी और यही वजह है कि वह न केवल अपने लिए बल्कि दूसरों के लिए भी लड़ने में सक्षम था। अमृ ता प्रीतम ने कभी खुद से झूठ नहीं बोला और ये बात भी जग जाहिर है अपनी आत्मकथा में। जब उनसे उनकी लाइफ के बारे में पूछा गया तो उन्होंने इस तरह से जवाब दिया- खोया। क्या या पाया क्या में जीवन मैंने कि पूछो मत मुझसे" ह क्या अभी पास मेरे कि पूछो मुझसे। मेरे पास शब्द हैं और मेरे पास इमरोजी है जिन्होंने मेरे जीवन को एक पेंटिंग की तरह रंग दिया और उसे कविता में बदल दिया।65 प्रीतम) ", 1988) अमृ ताप्रीतम का जीवन एक खुली किताब की तरह था। वह न केवल पंजाब के लिए बल्कि पूरे इंडिका के लिए गौरव हैं। अंत में हम कह सकते हैं कि अमृ ता प्रीतम की व्यावहारिक ही बहु त "टिकट रसीदी", संवेदनशील और आत्मकथा है गहरी समझ के साथ जो बिना किसी डर के पाठकों के समाज से परिचित कराया गया है।

## संदर्भ सूची


- "साहित्यकार अमृ ता प्रीतम नहीं रहीं". बीबीसी. मूल से 19 अप्रैल 2010 को पुरालेखित.
- साहित्य्कार अपनी रचनाओं द्वारा जीवित रहते हैं

- **अमृताप्रीतम की कहानियां व कविताएं**
- **विखयात कविता "आज अखां वारिस शाह नूं" के लिए विशेष रूप से याद किया जाता है**
- **अप्रवासी हिंदी साहित्य की राजनीति- सर्वेश कुमार मौर्य**